राजा, वायरस और खोया हुआ ताज़

(Hindi)

किसी समय सिर पर बिना ताज वाला एक राजा था . राजा दुखी था क्योंकि बिना ताज के न तो कोई उसे पहचानता और नहीं उसका सम्मान करता . राजा का ताज कुछ समय पहले चोरी हो गया था . चुराने वाला व्यक्ति किसी कार्टून जैसा दिखता था . वह छोटा था अजीब और खुद को 'वायरस' कहलाना पसंद करता था. लेकिन जबसे उसने राजा का ताज चुराया, सभी ने उसे 'कोरोना वायरस' कहना शुरू कर दिया था . वह अपने सिर पर सफ़ेद और लाल रंग का ताज पहने हमेशा इधर -उधर घूमता फिरता , कभी खेलता , उछलता - कूदता और कभी लोगों की दुकानों और घरों के अंदर जाकर उन्हें और उनकी सभी चीजों को हाथ लगाता . हर बार उसके छूने से उँगलियों की छाप उभरती और फिर लाल लकीरों की शक्ल में बारीक़ पाउडर की परत हर चीजों , घरों या व्यक्तियों पर बिखर जाती . जिसे छूने वाला कोई व्यक्ति लाल होने लगता और फिर धीरे – धीरे बीमार हो जाता . लेकिन वायरस जो कुछ कर रहा था उससे बहुत खुश था बल्कि इस बात से कि उसने कम समय में पुरे गाँव को अपने लाल घेरे में लिया उसे और अधिक ख़ुशी मिलती.

उधर,राजा इन बातों से बिलकुल खुश नहीं था.

राजा के सचिवों और सलाहकारों ने उन्हें हर दिन यह जानकारी दी कि ताज चुराने वाले उस टुच्चे चोर राक्षस ने उनके राज्य के रंगों में बदलाव करने के साथ साथ लोगों की मनोदशा को भी प्रभावित किया है : अब जनता पहले से ज्यादा दुखी और बीमार है . जबसे वायरस ने अपने सिर पर ताज पहना है लोग राजा से ज्यादा नफरत करने लगे हैं ऐसा लगता है मानो राजा ने उसे ताज अपने हाथों से सौंपा ताकि वह लोगों को परेशान करे. एक दिन राजा बहुत क्रोधित हुए वह उनके राज्य में जो कुछ भी हो रहा था उसे लेकर काफी चिंतित थे. उन्होंने यह निश्चय किया कि ताज को वापस लाने और सम्पूर्ण गाँव के जीवन को बर्बाद करने वाले टुच्चे को रोकने का समय अब आ गया है. राजा ने इस समस्या के समाधान को लेकर सोंचना शुरू किया उन्होंने अपने सचिवों और सलाहकारों को भी तलब किया ताकि वे इस बारे में उनके विचारों को जानने के बाद कोई ठोस निर्णय ले सकें . राजा दिनभर अपने विश्वापात्रों के साथ वायरस को रोकने के विषय पर चर्चा करते रहे लेकिन बैठक में दिए गए किसी सुझाव से वह आशवस्त नहीं हुए. उस शाम निराशा और चिंता के बीच राजा सोने चले गए.

लेकिन रात में सोते -सोते और सपने देखने के दौरान अचानक से मन में उठे एक विचार ने उन्हें काफी आश्वस्त किया. उन्होंने सोचा कि अगर वो सड़क निर्माण करने वाले उस एक मजदूर कामगार का रूप बनाए जो सड़क के गड्ढे भरने के लिए कोलतार का उपयोग करता है और इस गोंद्नुमा चिपचिपे काले तरल पदार्थ से भरी बाल्टी को सड़क पर उड़ेल दें तो उस पर पैर रखने वाला कोई भी व्यक्ति उसमे तुरंत फंस जाएगा . राजा ने सोचा कि वह मजदूर के कपड़ों और जरुरी सड़क मरम्मत के जरुरी उपकरणों के साथ अगले दिन गाँव के चारों ओर घूमकर वायरस की तलाश करने

निकलेंगे. और जैसे ही उस बदमाश से उनकी मुलाकात होगी उसे कुछ जानकारी लेने के बहाने नजदीक बुलायेंगे . फिर सड़क पर इस तरह से कोलतार उड़ेल देंगे की उसकी चपेट में आकर वह वहीं फंस जाए . इसी बीच जब वह अपने अचानक स्थिर होने और फंसने के कारण बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा होगा तभी वह उसके सिर से ताज वापस छीन लेंगे.

इस विचार से खुश होकर उन्होंने अपने निजी सचिव को एकदम सुबह में तलब किया और उसे तुरंत सड़क मजदूर के कपडे, जूते, काम करने वक्त इस्तेमाल किये जाने वाली टोपी , दस्ताने , बाल्टी और विशेष रूप से सड़क के गड्ढे भरने में इस्तेमाल होने वाले काले कोलतार लाने को कहा . कपडे और बाल्टी मिलने के बाद राजा ने अपना पूरा हुलिया बदला और ऐसा करते हुए बहुत खुश थे पर साथ में शायद थोड़ी घबराहट भी थी. वो अपने महल से बाहर इस तरह से निकलते हैं कि कोई उन्हें पहचान न सके. फिर वायरस की तलाश में गाँव के केंद्र की और बढ़ते हैं. और दूर से जैसे ही वह उन्हें एक बगल की गली से आता हुआ दिखा राजा ने खुद को तैयार किया और आवाज दी :

“वायरस जी मुझे आपसे कुछ सहायता चाहिए क्या आप मेरे नजदीक आ सकते हैं?”

वायरस ने यह सोचकर कि उसे एक नए ग्रामीण को छूने का अवसर मिलेगा, उसने खुशी से अपने कदम आगे बढाए उसे सामने वाला शख्स कोई मजदूर नजर आ रहा था. लेकिन मजदूर बने राजा के नजदीक पहुचने पर उसे अपने पैरों का जमीन से चिपकने का अहसास हो चूका था क्योंकि राजा ने इस बीच आसपास की जमीन पर काफी कोलतार उड़ेल दिया था. वह कोलतार गोंद्नुमा चिपचिपे तरल पदार्श के चपेट में पूरी तरह आ गया था और अब बांहे इधर- उधर घुमाकर चीखने-चिल्लाने लगा और जूते बाहर निकालने की कोशिश करता रहा पर इस बीच राजा ने वायरस के सिर से ताज छीन लिया और पलक झपकते ही उसकी नजरों से दूर हो गए.

लेकिन वायरस वहीं खड़ा रहा बिना ताज के नंगे हो चुके अपने सिर के साथ और पूरी ताकत के साथ चीखता चिल्लाता रहा. इस बीच आसपास की गली से वहां रहने वाले लोगों की भीड़ जमा होने लगी वह सब जानना चाह रहे थे कि आखिर माजरा क्या है और जब उन सब ने वायरस को बिना ताज जमीन से चिपके हुए पाया तो जोर शोर से ख़ुशी जाहिर करने लगे. आखिरकार उनमे से कोई जाकर रस्सी ले आया जिससे उसे चारो ओर अच्छी तरह से बाँधा गया फिर उसके चिपके हुए जूते को जमीन से अलग करके सभी ने मिलकर उसे जेल में डाला ताकि गाँव को उसके विनाशकारी नकारात्मक प्रभाव से मुक्त किया जा सके और बीमारी के कारण लाल हो रहे लोगों को बचाया जा सके.

राजा अपने महल में लौट आये थे, उन्होंने अपनी राजसी पोशाक पहन ली थी और सिर पर ताज भी धारण किया. फिर सभी की जानकारी के लिए एक जुलूस निकाला गया ताकि जनता को पता चल सके कि उनका राजा लौट आया है , वह अब भी उतना ही अच्छा है जितना पहले था, गाँव

में चारो तरफ शांति कायम हो चुकी है, सभी बीमार अब स्वस्थ हो चुके, अब कैद हो चुके शापित वायरस की अनुपस्थिति में जिन्दगी सभी के लिए पहले से अधिक सही और खुबसूरत हैं.

(Aijt Singh)